डायनासोर की सवारी

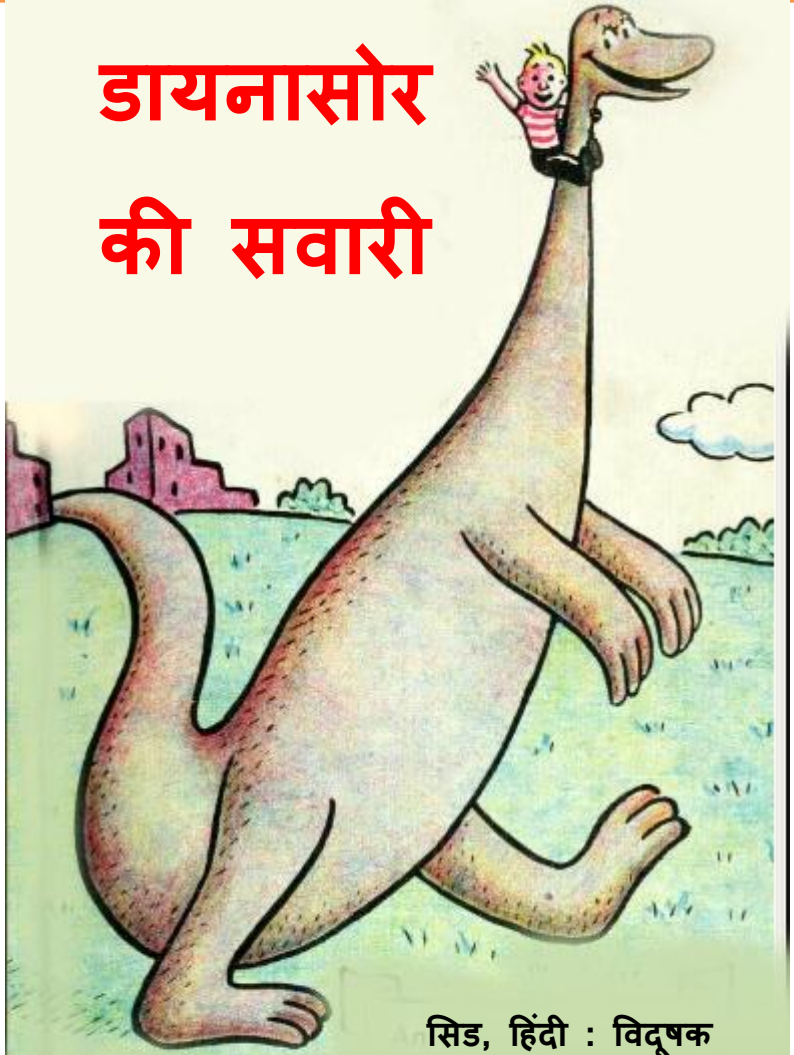

सिड, हिंदी : विदूषक

डायनासोर की सवारी

सिड, हिंदी : विदूषक

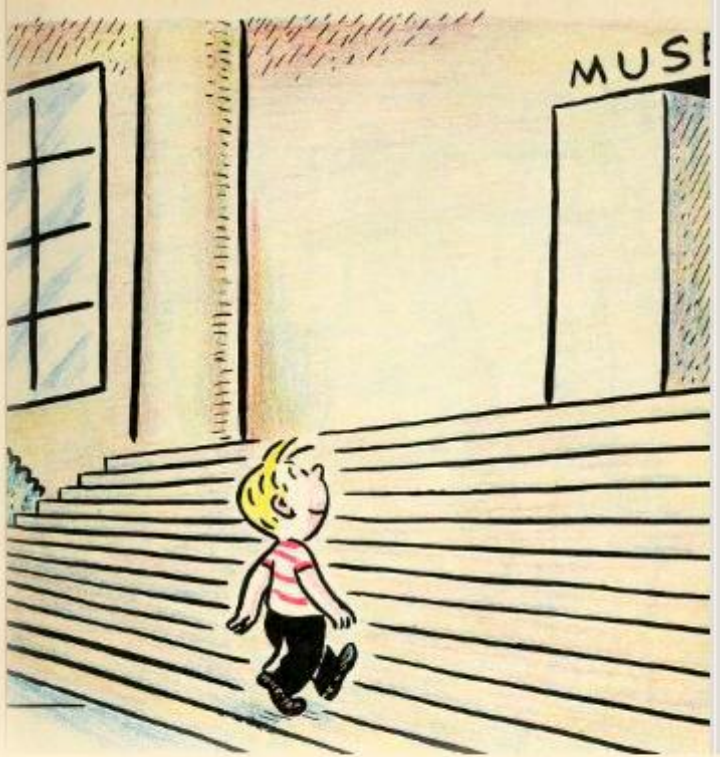

एक दिन डमी म्यूजियम गया.
म्यूजियम में अन्दर क्या-क्या है,
वो देखना चाहता था.

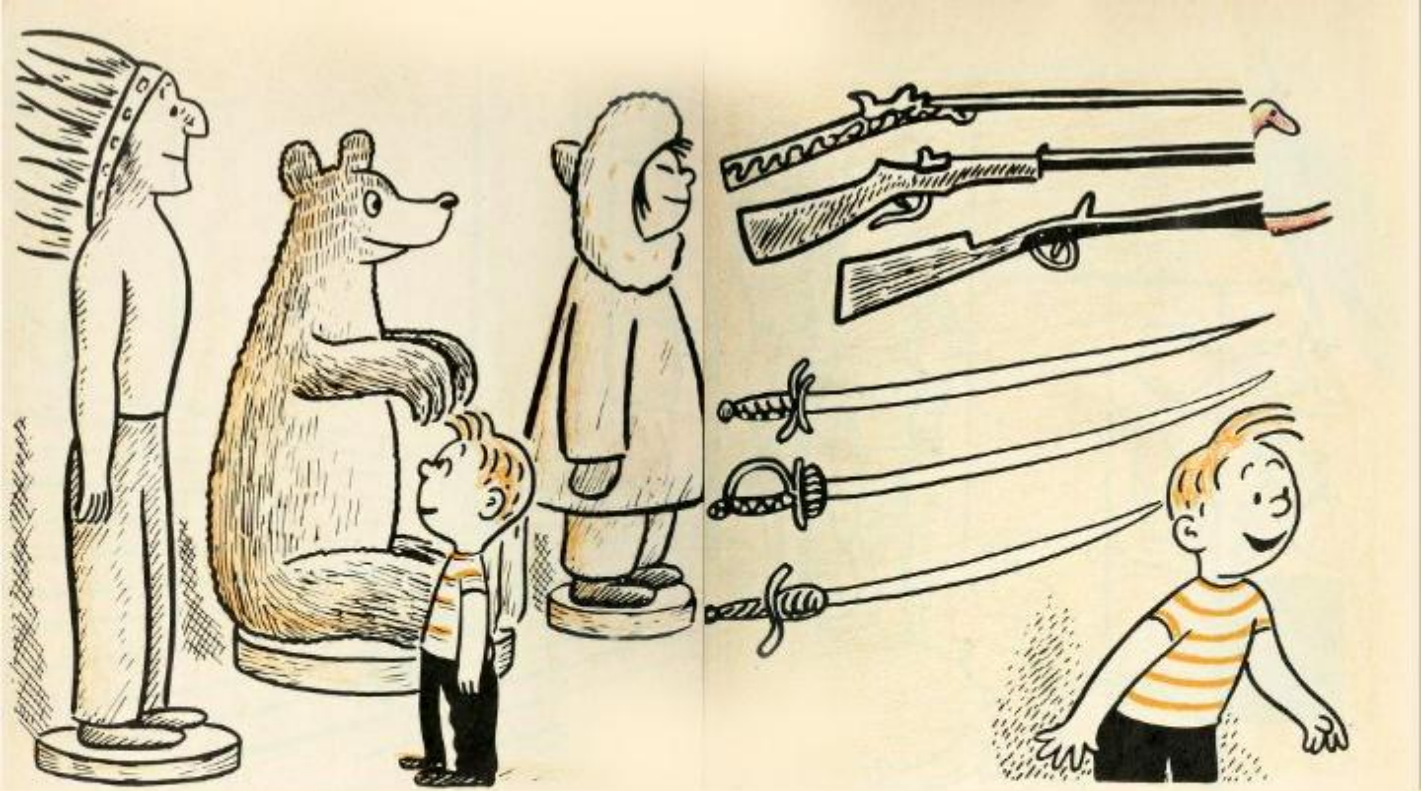

वहां उसे इंडियन्स दिखे.
उसे भालू दिखे.
वहां उसे एस्किमो दिखे.

उसे वहां बंदूकें दिखीं.
उसे वहां तलवारें दिखीं.
और उसे दिखे...

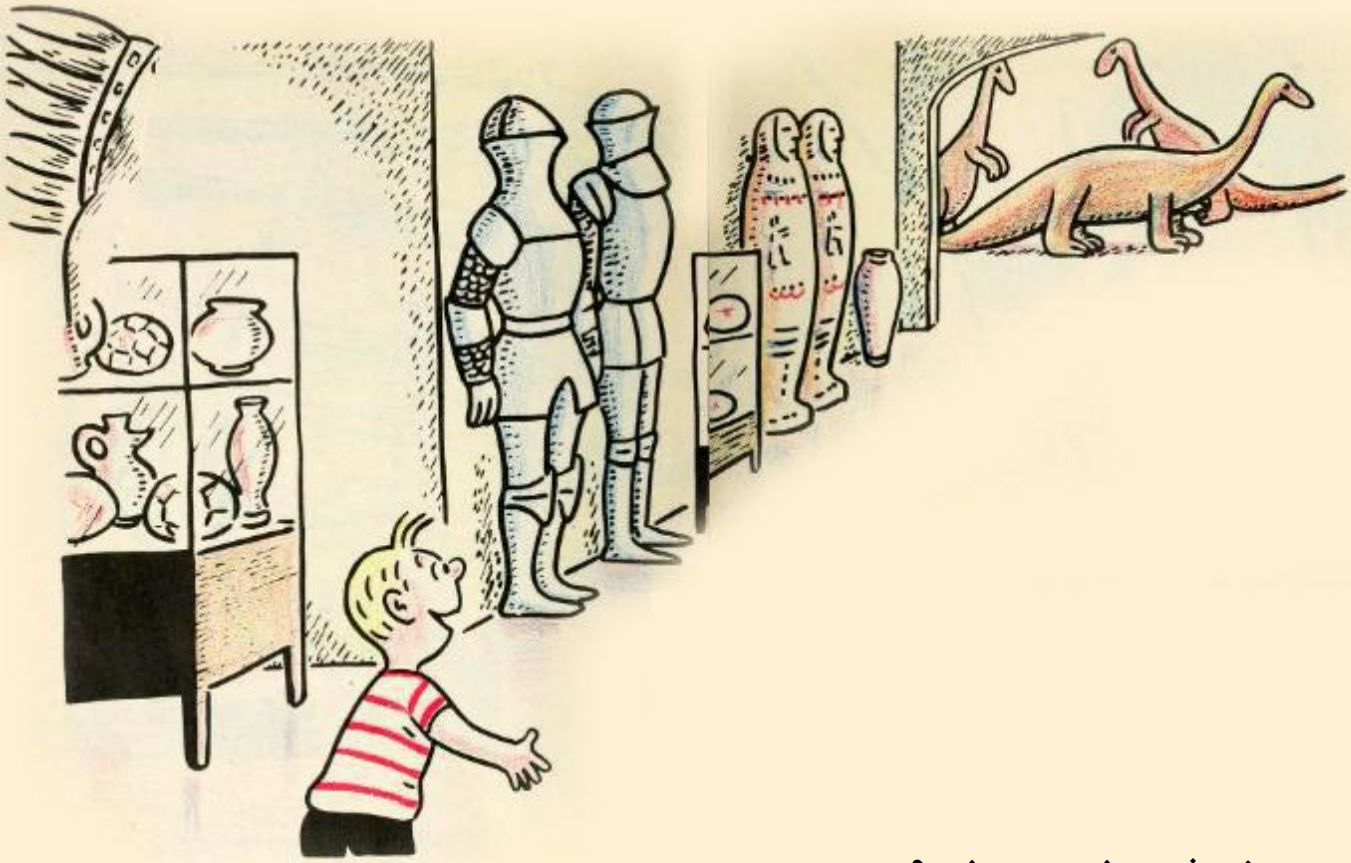

डायनासोर !

डमी को डायनासोर पसंद थे.
काश उसका भी अपना एक
डायनासोर होता!

“मुझे दुःख है कि वे असली डायनासोर नहीं हैं,” डमी ने कहा. “पर डायनासोर के साथ खेलने में मुझे बहुत मज़ा आएगा.”

“मुझे भी तुम्हारे साथ खेलने में बहुत मज़ा आएगा,” एक आवाज़ आई. “क्या सचमुच?” डमी ने पूछा.

"हाँ, बिल्कुल," डायनासोर ने कहा.
"बहुत बढ़िया," डमी ने कहा.
"अब हम क्या करें?"

"मैं तुम्हें बाहर घुमाने के लिए ले चलता हूँ," डायनासोर ने कहा.
फिर डायनासोर ने अपना सिर नीचे किया जिससे डमी उसपर चढ़ सके.

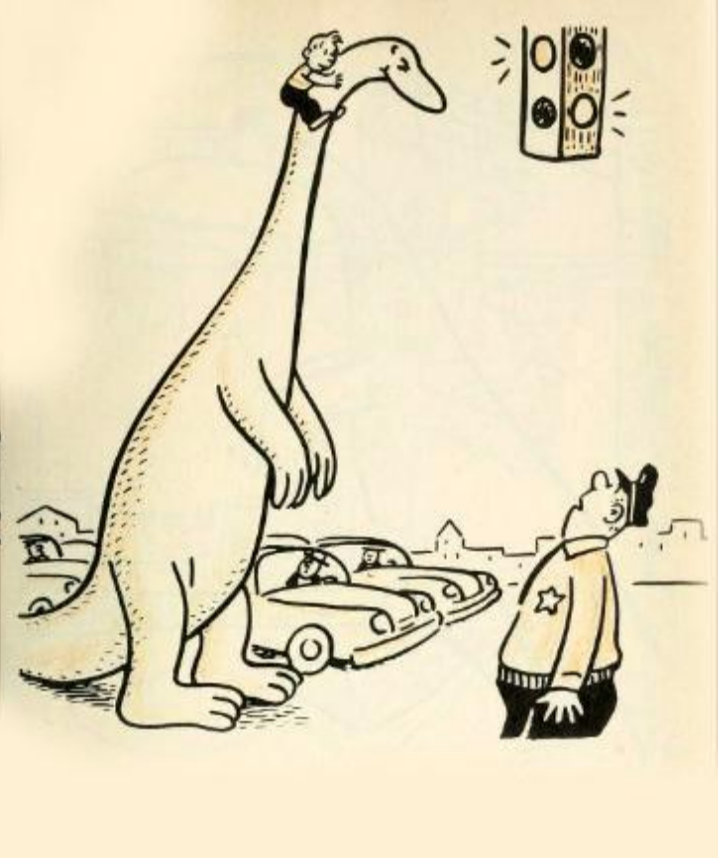

“चलो अब चलें!” डमी ने कहा.

ट्रैफिक पुलिसमैन उन्हें घूरता रहा.
उसने कभी भी किसी डायनासोर को
लाल-बत्ती पर रुकते हुए नहीं देखा था.

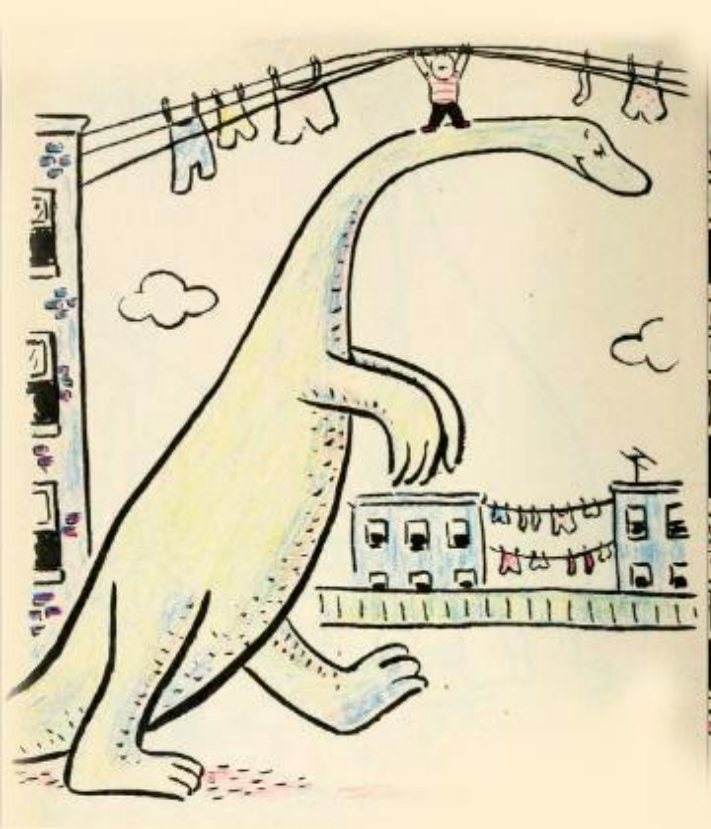

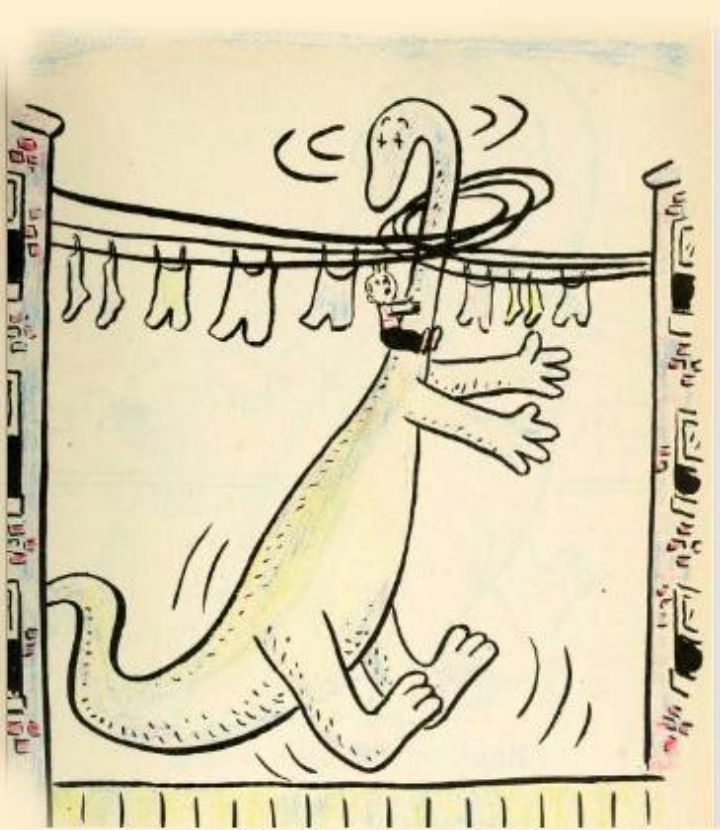

डायनासोर इतना ऊंचा था कि
डमी को कपड़े सुखाने वाली
डोरियों को ऊपर उठाना पड़ा.

“ज़रा बाहर देखो!” डमी ने कहा.

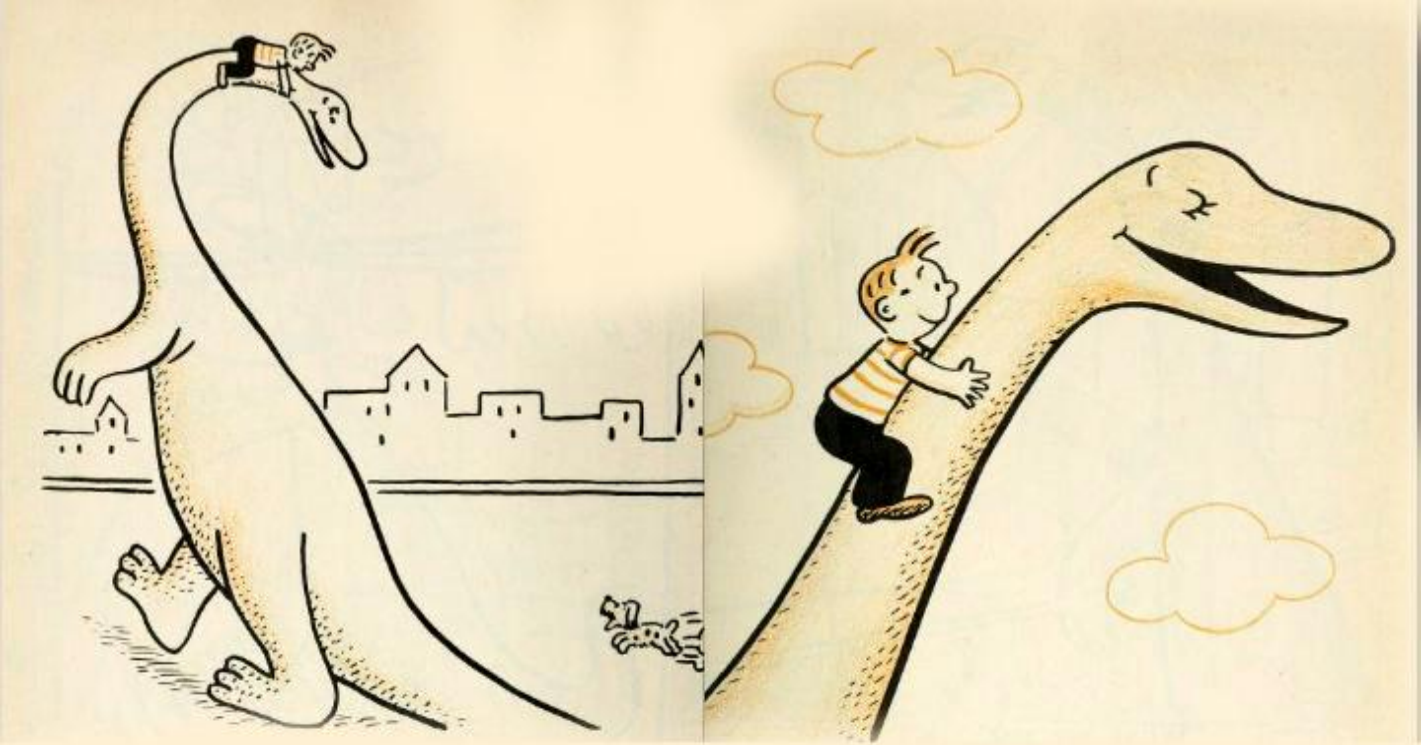

“भों! भों!” एक कुत्ता उनके पीछे
दौड़ते हुए भौंका.
“वो सोच रहा है कि तुम कोई
मोटरकार हो,” डमी ने कहा. “कुत्ते
तुम भागो. हम मोटरकार नहीं हैं.”

“देखो मैं मोटरकार जैसी
आवाज़ भी निकाल सकता हूँ,”
डायनासोर ने कहा.
“पीं! पीं! पीं!”

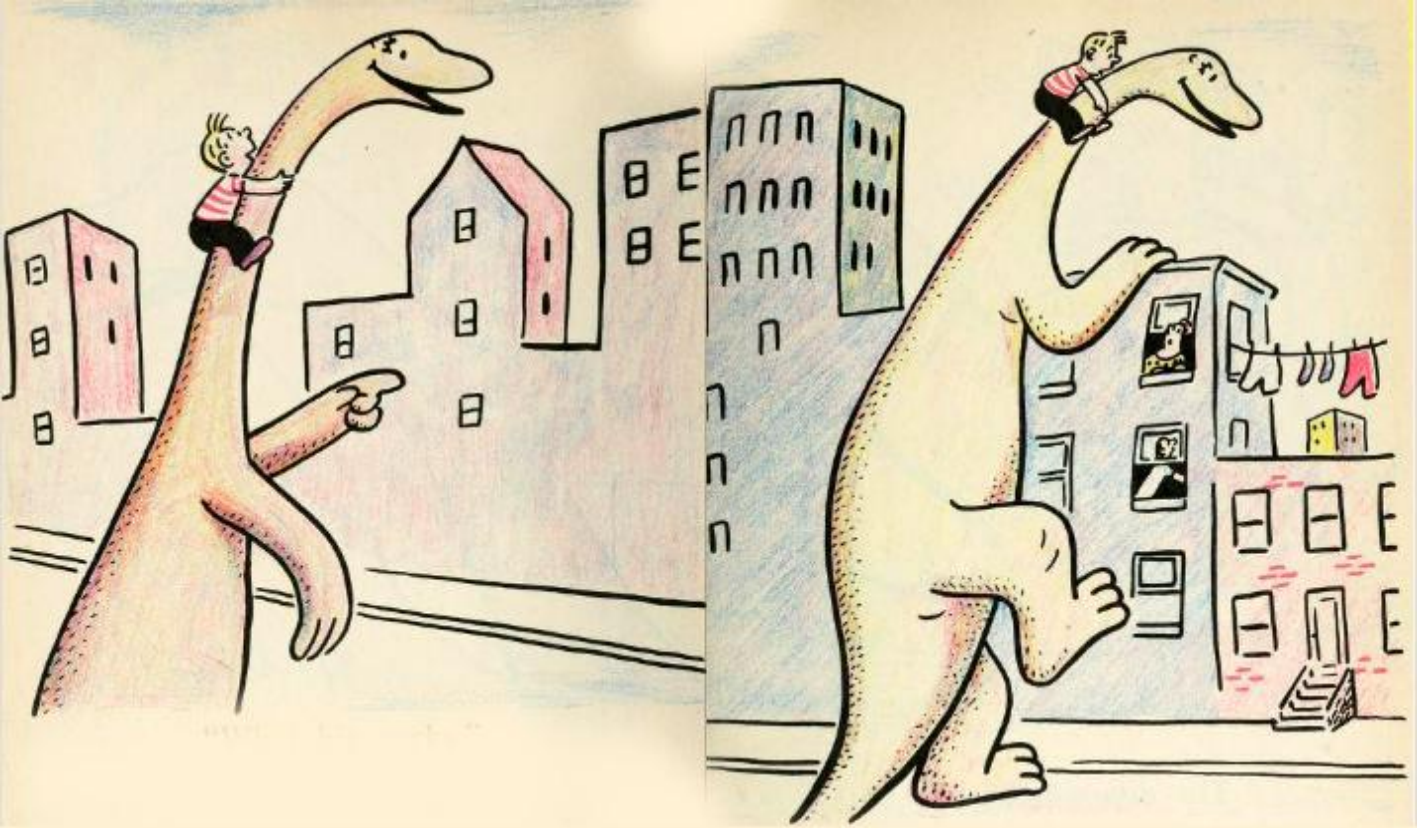

“यहाँ कितने बड़े-बड़े पत्थर हैं,”
डायनासोर ने कहा.
“यह पत्थर नहीं, बिल्डिंग्स हैं,” डमी ने कहा.
“इन बिल्डिंग्स पर चढ़ना मुझे अच्छा लगेगा.”

“मुझे उन पर चढ़ने में मज़ा आएगा,”
डायनासोर ने कहा.
“थोड़ा नीचे झुको,” डमी ने कहा.

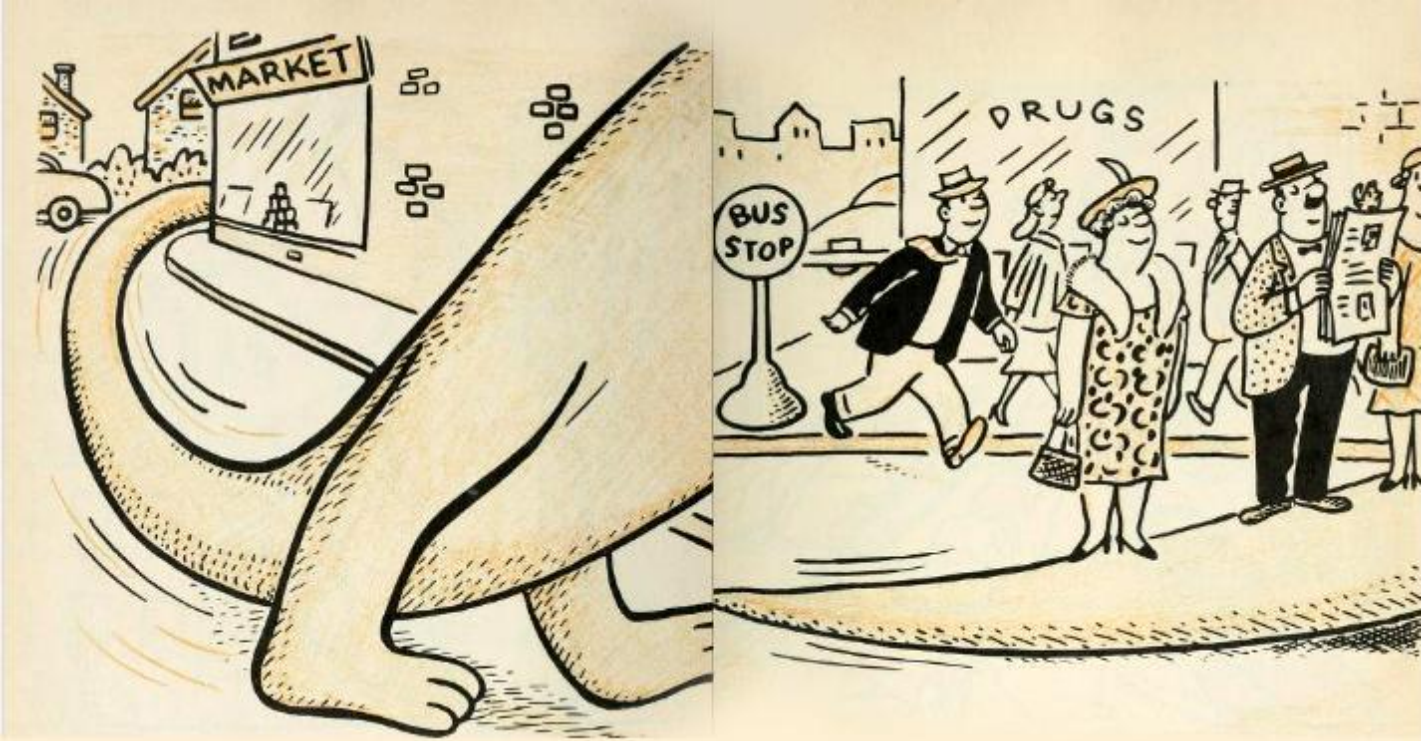

डायनासोर को बहुत सावधानी बरतनी पड़ी जिससे वो अपनी लम्बी पूँछ से किसी घर या दुकान को नुकसान नहीं पहुंचाए.

कुछ लोग बस के इंतज़ार में खड़े थे. बस आई नहीं. तब उन लोगों ने डायनासोर की पूँछ पर चढ़कर यात्रा की.

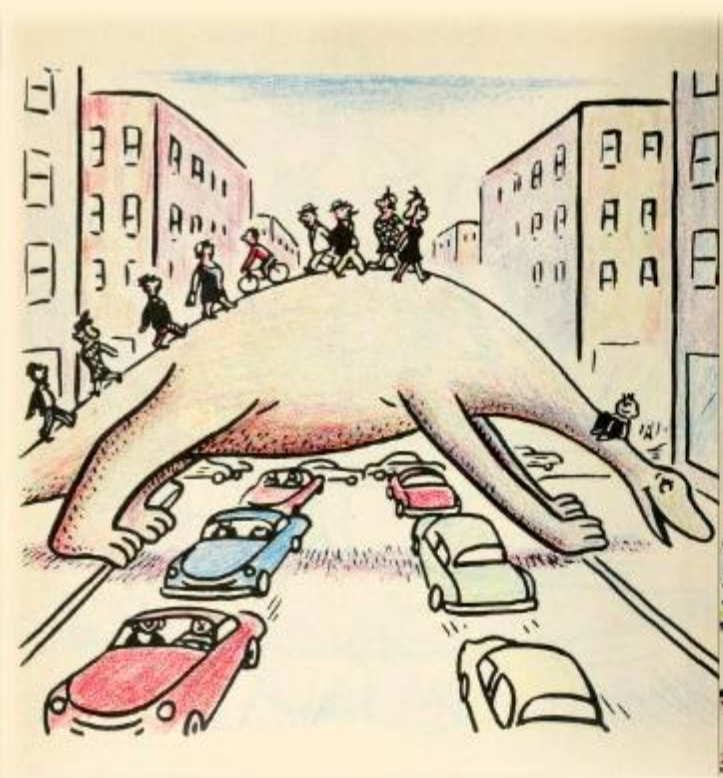

“सड़क पार करने वाले मेरी पीठ पर
चढ़कर सड़क पार करें,”
डायनासोर ने कहा.

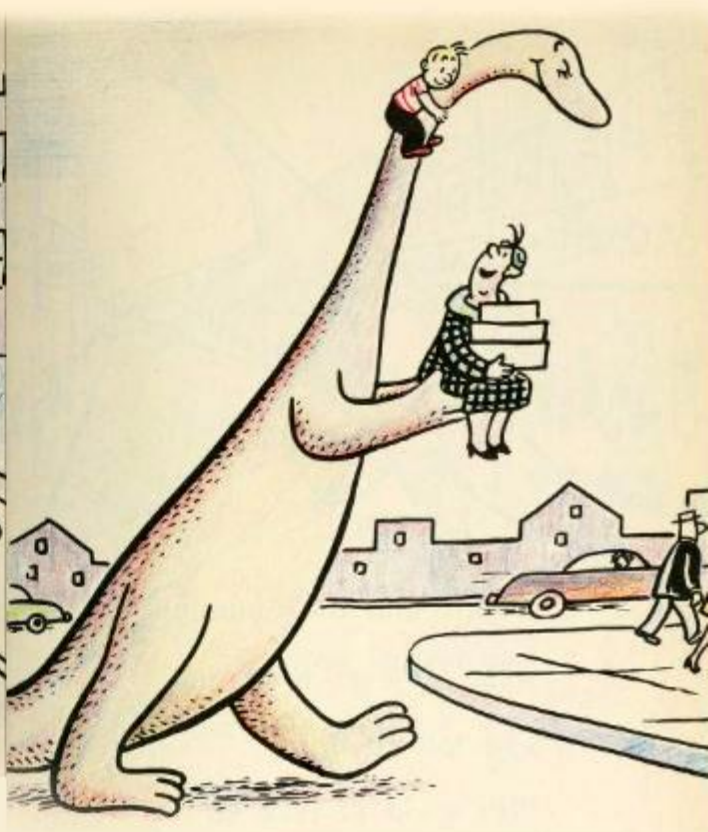

“तुमने इन भारी थैलों को उठाने में
मेरी मदद की उसके लिए तुम्हारा
बहुत शुक्रिया,” एक महिला ने कहा.

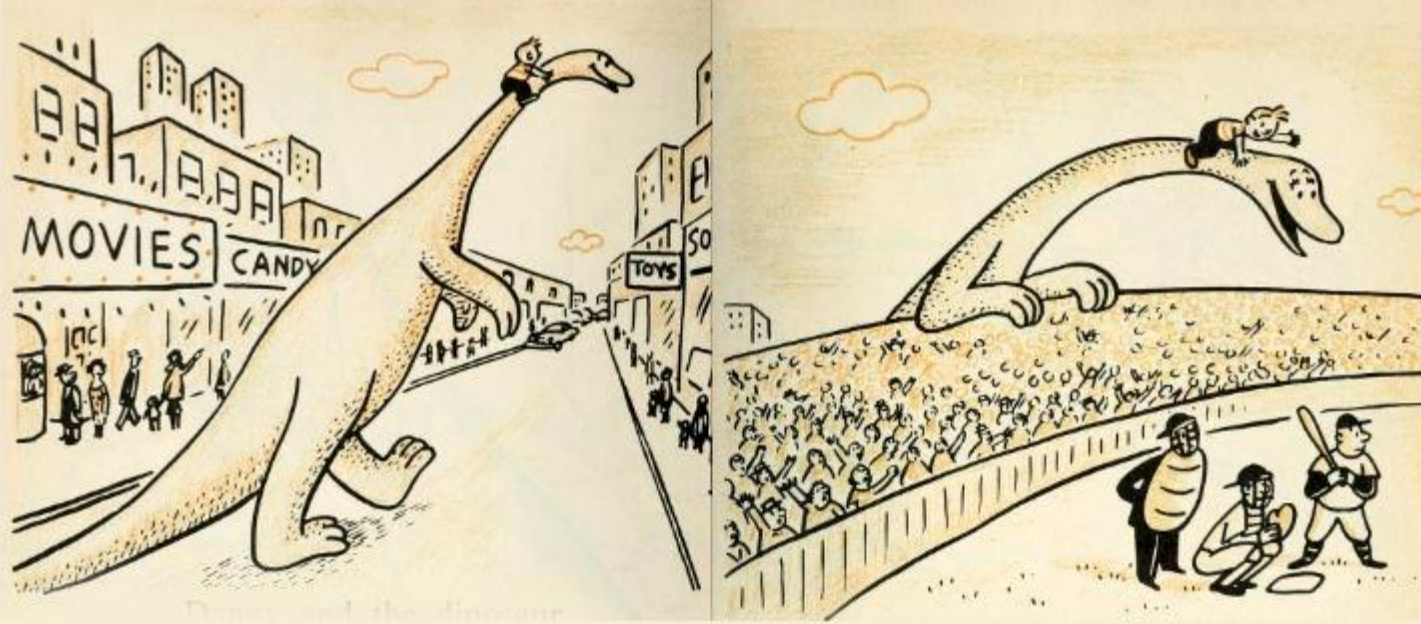

डमी और डायनासोर ने पूरे शहर का चक्कर लगाया. उसमें उन्हें बड़ा मज़ा आया. “लाखों-करोड़ों सालों के बाद घंटे दो-घंटे मस्ती करने में मुझे बहुत मज़ा आया,” डायनासोर ने कहा.

उन्होंने लोगों को गेंद का खेल खेलते हुए भी देखा.
“पहले बाल को मारो,” डमी ने कहा.
“फिर दौड़ कर रन लो,” डायनासोर ने कहा.

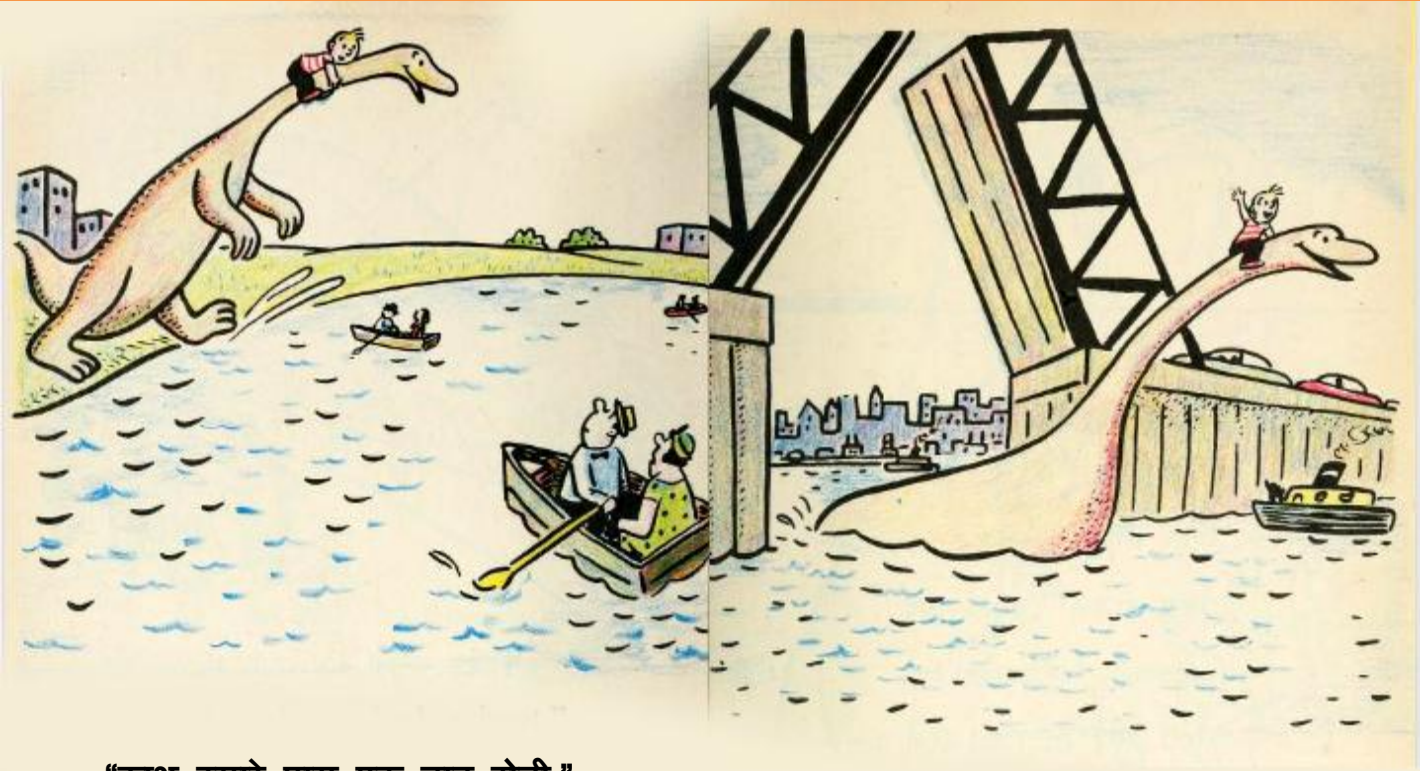

“काश हमारे पास एक नाव होती,”
डमी ने कहा.
“अरे हमें नाव की क्या ज़रुरत?
मुझे अच्छी तरह तैरना आता है,”
डायनासोर ने कहा.

फिर आगे हॉर्न बजाती नावें चलीं.
और उनके पीछे-पीछे डमी और
डायनासोर चले.

“अरे यहाँ तो बहुत नर्म और हरी घास है!” डायनासोर ने कहा. “मैंने बरसों से इतनी अच्छी घास नहीं चखी है.”

“ज़रा रुको,” डमी ने कहा.

“देखो, यहाँ क्या लिखा है.”

घास से दूर रहो!

आइसक्रीम

फिर दोनों ने घास की बजाए आइसक्रीम खाई.

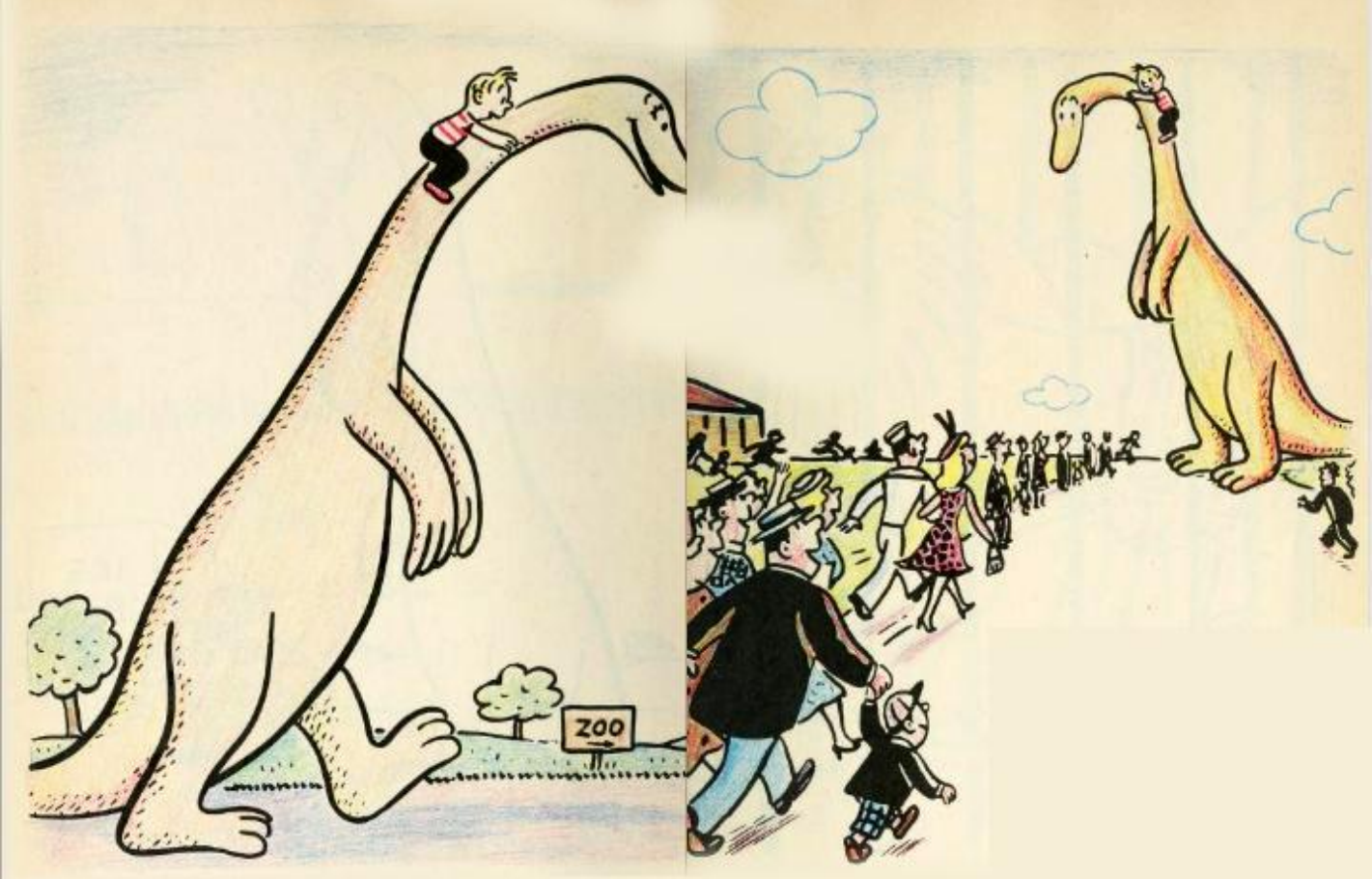

“चलो, अब चिड़ियाघर में जाकर जानवरों को देखते हैं,” डमी ने कहा.

चिड़ियाघर में सब लोग डायनासोर को देखने के लिए टूट पड़े.

कोई भी शेरों को देखने के लिए नहीं रुका.

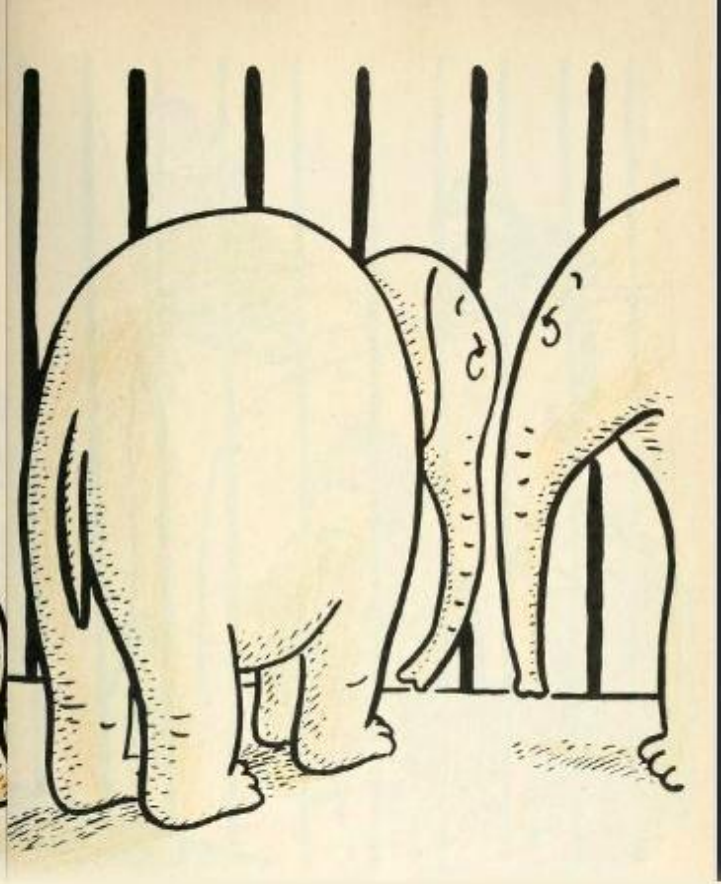

कोई भी हाथियों को देखने नहीं रुका.

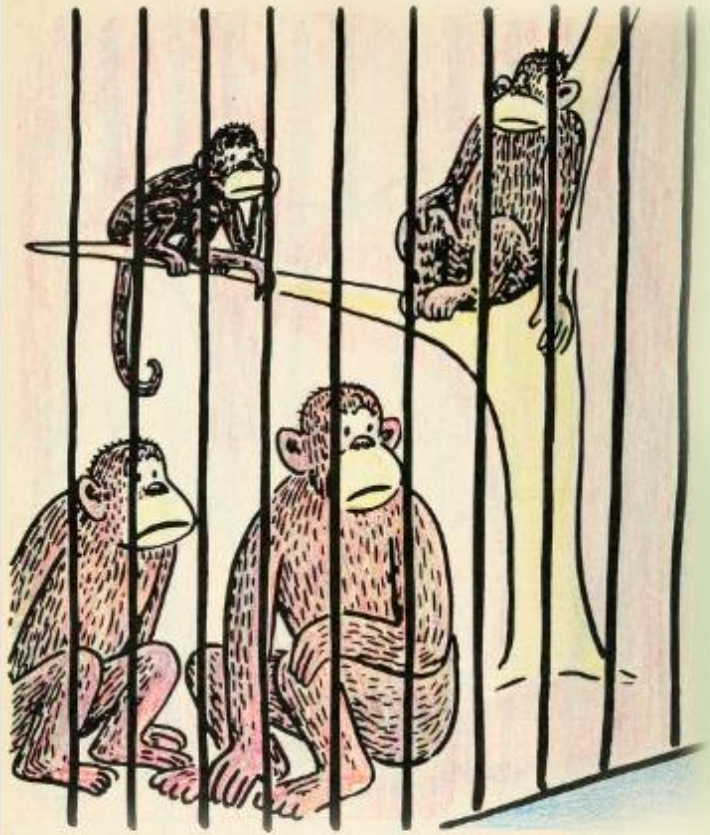

कोई भी बंदरों को देखने के लिए नहीं रुका.

कोई भी सील्स, जिराफों और गेंडों को देखने के लिए नहीं रुका.

“तुम कृपाकर यहाँ से जल्दी जाओ.
तभी लोग यहाँ जानवरों को देखेंगे,”
चिड़ियाघर के इंचार्ज ने कहा.

“पहले ज़रा मैं अपने दोस्तों से तो मिल लूं,”
डमी ने कहा.
“ठीक है,” डायनासोर ने कहा.

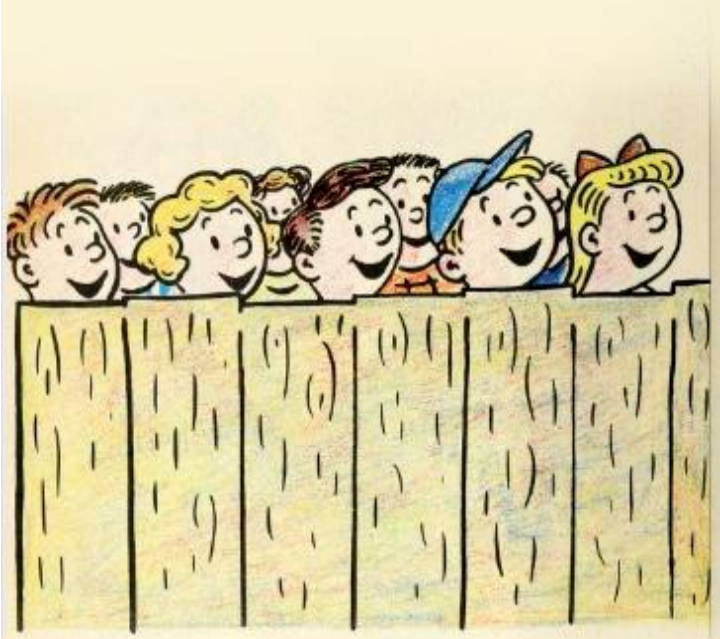

“देखो, वो रहे मेरे दोस्त,” डमी ने कहा.
“देखो, हमारा डमी, डायनासोर की सवारी कर रहा है,” एक बच्चे ने कहा.
“हो सकता है, हमें भी डायनासोर की सवारी मिल जाए.”

“क्या हम तुम्हारी पीठ पर सवारी कर सकते हैं?” बच्चों ने पूछा.
“मुझे बहुत ख़ुशी होगी,” डायनासोर ने कहा.
“डायनासोर को कसकर पकड़ना,” डमी ने कहा.

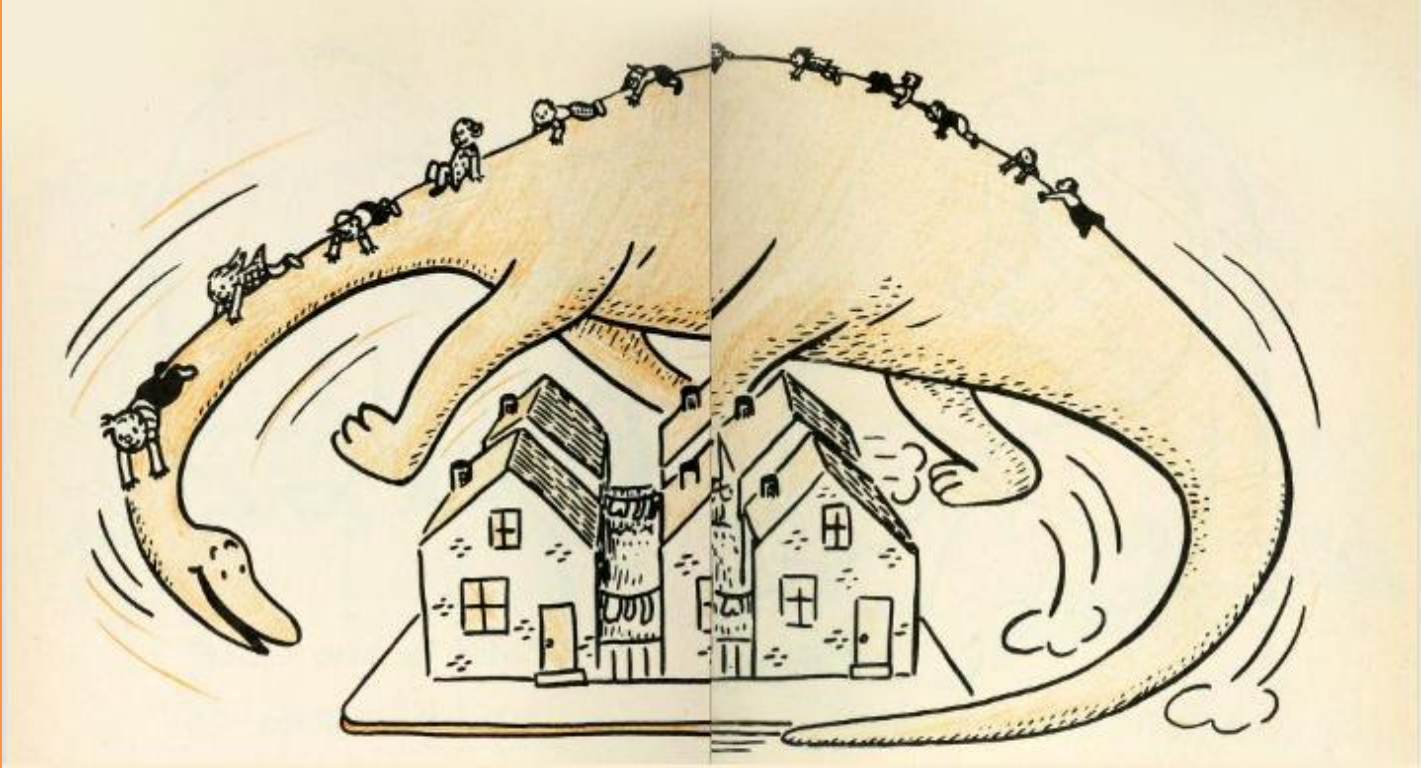

डायनासोर बिल्डिंग्स के चारों ओर
गोल-गोल दौड़ा.
वो तेज़ और बहुत तेज़ दौड़ा.

“यह तो मेरी-गो-राउंड से भी बेहतर है,”
बच्चों ने कहा.

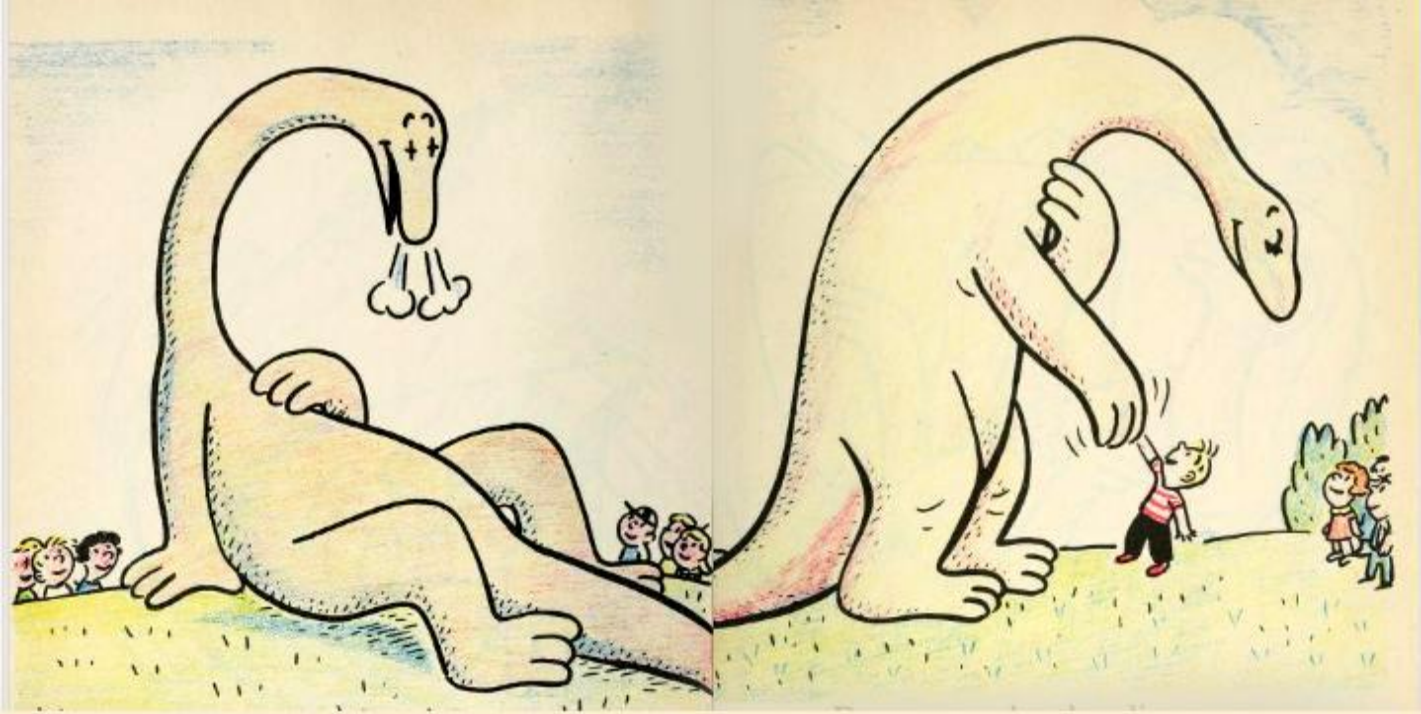

थोड़ी देर में डायनासोर की
सांस फूलने लगी.
“चलो, उसे कुछ ट्रिक्स सिखाते हैं,”
बच्चों के कहा.

डमी ने डायनासोर को
हाथ-मिलाना सिखाया.
“क्या तुम अपनी पीठ के
बल लुढ़क सकते हो?” बच्चों ने पूछा.

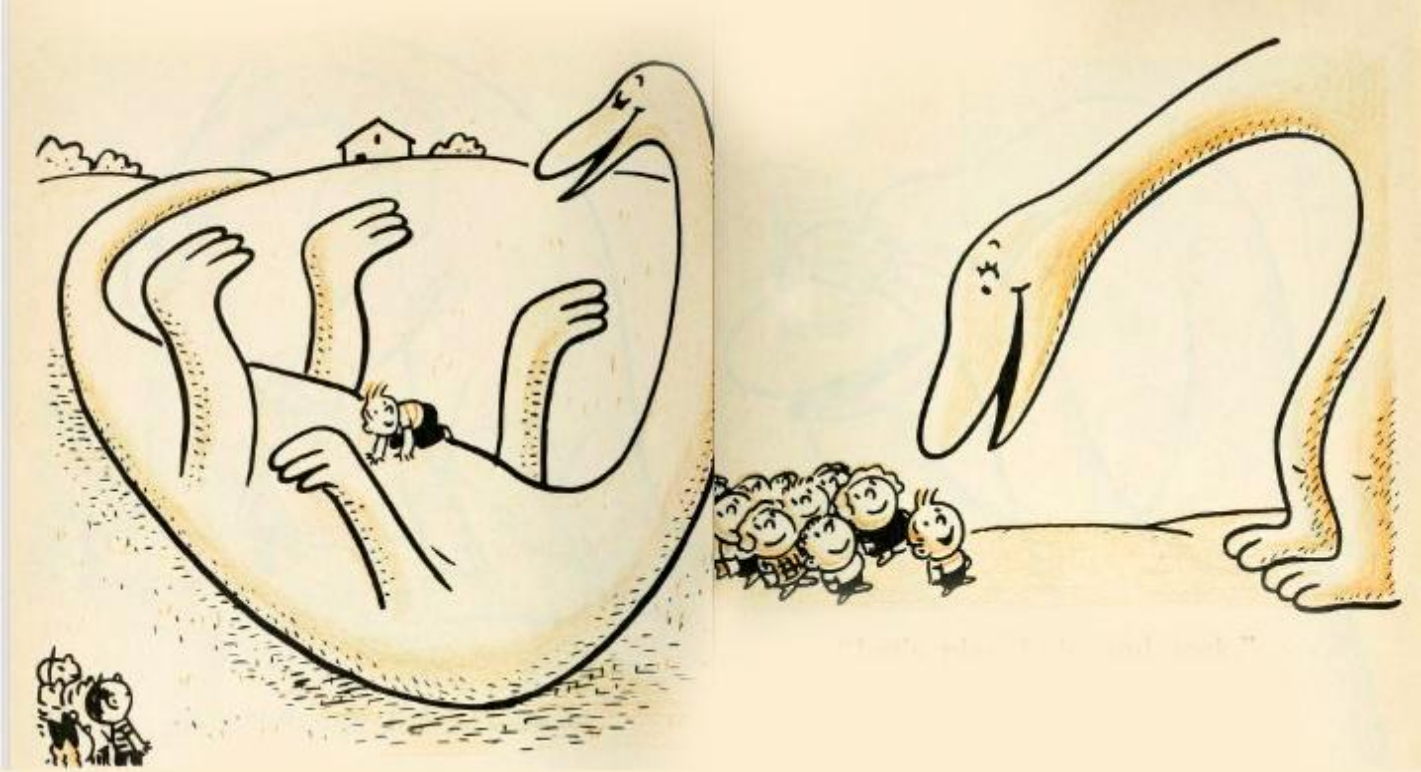

“वो तो आसान है,” डायनासोर ने कहा.
“वो बहुत होशियार है,” डमी ने
डायनासोर को पुचकारते हुए कहा.

“चलो अब छिपा-छिली खेलते हैं,”
बच्चों ने कहा.
“उसे कैसे खेलते हैं?” डायनासोर ने पूछा.
“हम छिप जायेंगे और फिर तुम हमें
ढूँढना,” डमी ने कहा.

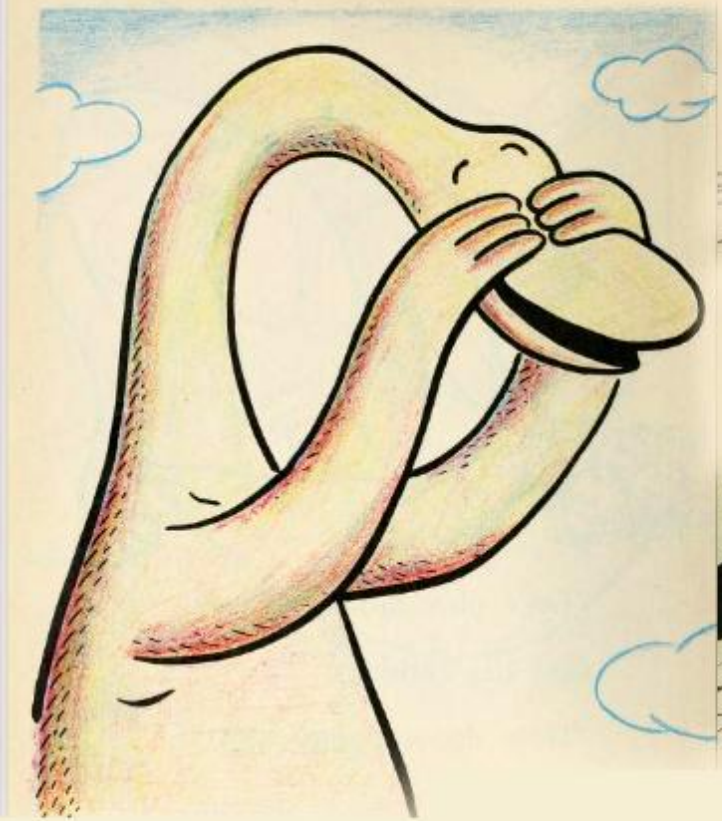

फिर डायनासोर ने अपनी आँखें बंद कीं.

सारे बच्चे छिपने के लिए दौड़े.

फिर डायनासोर ने इधर-उधर चारों ओर देखा
पर उसे बच्चे कहीं दिखाई ही नहीं दिए.
“मैं अपनी हार मानता हूँ,” उसने कहा.

अब डायनासोर ने छिपने का समय था.
सब बच्चों ने अपनी आँखें बंद कीं.

पहले डायनासोर एक घर के पीछे छिपा.
पर बच्चों ने उसे खोज निकाला.

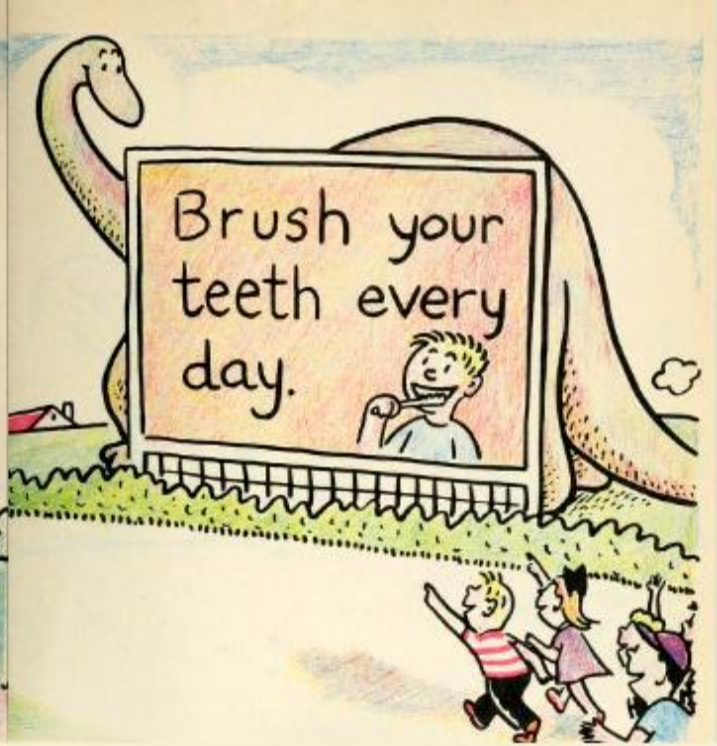

फिर वो एक बड़े साइन-बोर्ड के पीछे जाकर
छिपा. पर बच्चों ने उसे खोज निकाला.

उसके बाद वो गैस के एक बड़े टैंक के पीछे जाकर छिपा. पर बच्चों ने उसे बार-बार ढूंढ निकाला.

“ऐसा लगता है जैसे यहाँ पर मेरे छिपने के लिए कोई जगह नहीं है,” डायनासोर ने रोते हुए कहा.

“चलो अब हम झूठ-मूठ का खेल खेलेंगे और डायनासोर को नहीं खोजेंगे,” डमी ने कहा.

View Page 6

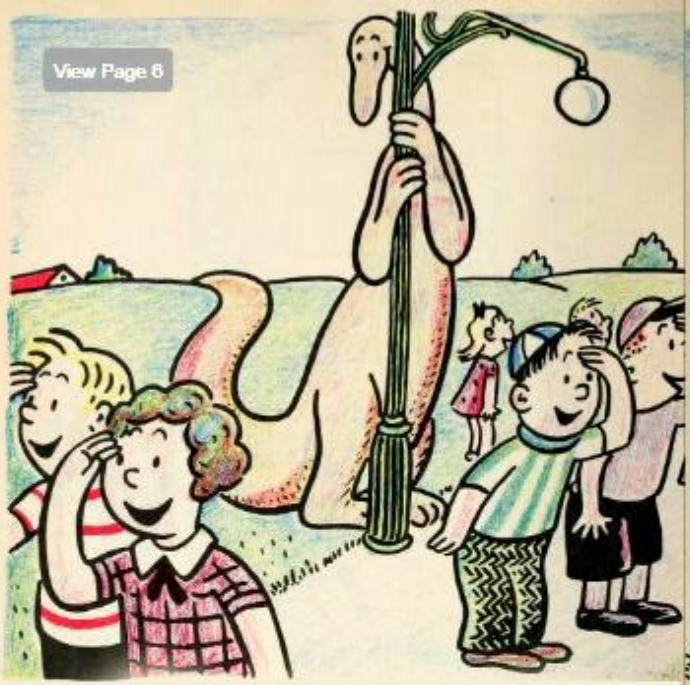

“वो कहाँ छिपा हो सकता है?
कहाँ, छिपा है डायनासोर?
वो कहाँ गायब हो गया?
हम तो उसे खोजते-खोजते हार गए,”
बच्चों के कहा.

“मैं यहाँ हूँ,” डायनासोर ने कहा.

“डायनासोर जीता,” बच्चों के कहा.
“हम उसे नहीं ढूँढ पाए, उसने हमें
अच्छा पागल बनाया.”

“डायनासोर की हुर्रे!” बच्चे चिल्लाए.
“हुर्रे! हुर्रे!”

“क्या तुम मेरे साथ नहीं रह सकते?”
डमी ने कहा.
“तब हम रोज़ मस्ती कर सकते हैं.”
“नहीं,” डायनासोर ने कहा.
“मुझे तुम्हारे साथ आज बहुत मज़ा आया – पिछले लाखों-करोड़ों सालों में मैंने कभी इतनी मस्ती नहीं की. पर अब मुझे म्यूजियम में वापिस जाना होगा.”
“ठीक है,” डमी ने कहा. “चलो, अलविदा.”

अब काफी देरी हो गई थी. इसलिए बाकी बच्चे अपने-अपने घर चले गए.
सिर्फ डमी और डायनासोर ही बचे.
“चलो अलविदा, डमी,” डायनासोर ने कहा.

डमी, डायनासोर को तब तक देखता रहा जब तक डायनासोर की पूँछ गायब नहीं हो गई.

फिर डमी अकेले अपने घर की तरफ चला.

“ठीक है,” डमी ने कहा, “घर में इतने
बड़े पालतू जानवर की जगह भी नहीं है.
पर आज का दिन बड़ी मस्ती में बीता.”